''हृदय रोगियों को 21वीं सदी का अनुपम उपहार''
ई.ई.सी.पी. (Enhanced External Counter Pulsation)

डॉ. अशोक गोयल, (एम.डी.)
कन्सलटेन्ट फिजिशियन एवं कॉर्डियोलोजिस्ट
9314502380

बनीपार्क हार्ट एण्ड जनरल हास्पिटल,
डी-9, कबीर मार्ग, बनीपार्क,
जयपुर-302016.

फोनः0141-2203864,
फैक्सः2202382.
Email: bphospital@gmail.com

चिकित्सा जगत मानव जाति को आरोग्य प्रदान करने के लिये विभिन्न रोगों के नित्य नये–नये उपचार खोज रहा है। इसी क्रम में ई.ई.सी.पी. का आविष्कार एक क्रांतिकारी कदम हैं और हृदय रोगियों को 21वीं सदी का एक अनुपम उपहार है।

असंयमित जीवन, असंतुलित आहार–विहार और बढते प्रदूषण के कारण भारत में हृदय रोगियों की संख्या निरन्तर बढ रही है। गाँवों और झौपडियों तक अब यह रोग अपने पैर पसार रहा है। विडम्बना तो यह है कि एंजियोप्लास्टी/स्टेन्ट/बाईपास सर्जरी के उपरान्त भी अनेक हृदय रोगी सामान्य जीवन जीने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। ताजा सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 4 करोड़ हृदय रोगी हैं और यदि यही स्थिति रही तो संभावना हैं कि सन् 2020 तक लगभग एक चौथायी देशवासी हृदय रोगों की चपेट में आ जायेंगे।

यह एक चुनौती थी– चिकित्सकों के लिये, जन सामान्य के लिये। इस चुनौती का उत्तर हमारे चिकित्सा विज्ञान के साधकों ने दिया है – ई.ई.सी.पी. का अविष्कार कर। उन्होंने जटिलताओं से जूझते हृदय रोगियों को आशा की एक नयी किरण दिखायी है। ई.ई.सी.पी. का योगदान न केवल हृदय रोगियों के उपचार में सहायक है बल्कि हृदय रोगों से बचाव का भी एक अचूक साधन है। अब वह समय दूर नहीं जब इसका उपयोग हृदय रोगों के अतिरिक्त अन्य रोगों से बचाव व उपचार में भी सम्भव हो सकेगा।

यह उपचार पद्धति मुख्य रूप से निम्न श्रेणी के रोगों से ग्रसित व्यक्तियों के लिये वरदान सिद्ध हुई है।

1. हृदय धमनियों में पुनः अवरोध :–

हृदय रोग से पीड़ित होने पर व्यक्ति चिकित्सक के पास जाते हैं। रोगी की स्थिति के अनुसार विशेषज्ञ द्वारा कुछ रोगियों को बाईपास सर्जरी/ एंजियोप्लास्टी/स्टेन्ट की सलाह दी जाती हैं, उनकी सर्जरी भी हो जाती है, परन्तु देखा गया है कि इनमें से अनेक रोगी चिकित्सकों के निर्देशों का पालन भूलकर बेपरवाह हो जाते हैं, परिणामस्वरूप कुछ समय पश्चात् उनकी धमनियों में पुनः अवरोध उत्पन्न होने लगते हैं। इनमें से कुछ में ही पुनः सर्जरी/एंजियोप्लास्टी/स्टेन्ट सम्भव हो पाता है, शेष को दवाओं से ही काम चलाना पड़ता है।

पुनः अवरूद्ध धमनियों की सर्जरी/एंजियोप्लास्टी/स्टेन्ट के उपरान्त भी अनेक रोगियों की धमनियों में पुनः अवरोध (Reblockage) उत्पन होने लगते हैं। जिनकी फिर से सर्जरी संभव नहीं हो पाती। ऐसे रोगियों को दवाओं पर निर्भर रहकर येन–केन प्रकारेण अपना जीवन व्यतीत करना पडता हैं।

आज तो चिकित्सकों के पास 15% से अधिक केस हृदय धमनियों के पुनः अवरोध के आ रहे हैं। यह एक विचारणीय स्थिति हैं।

2. <u>हृदय–धमनियों की दोष पूर्ण संरचना</u> :–

अनेक हृदय रोगी ऐसे हैं जिनकी हृदय धमनियों की संरचना ही दोषपूर्ण होती हैं। जिसके कारण अवरोध उत्पन्न होने पर न उनके एंजियोप्लास्टी/स्टेन्ट संभव है और न ही बाईपास सर्जरी। ऐसे रोगियों को मृत्यु से संघर्ष करते हुए अपनी जीवन यात्रा पूरी करनी पड़ती है।

3. <u>हृदय रोगों के साथ अन्य जटिल व्याधियाँ</u> :–

इस प्रकार के हृदय रोगी वे हैं जो हृदय रोगों के साथ ही अन्य किसी जटिल बीमारी जैसे– गुर्दा रोग, यकृत रोग या अस्थमा आदि से पीड़ित हैं और सर्जरी के योग्य नहीं हैं। ऐसे रोगियों को भी अपना शेष जीवन जैसे–तैसे दवाओं के सहारे ही बिताना पड़ता है।

उपर्युक्त सभी प्रकार के रोगियों के लिये तो स्थिति तब और भी विकराल हो जाती है जब इनमें से अनेक रोगियों के दवा भी काम करना बन्द कर देती है। ऐसे व्यक्तियों का जीवन अंधकारमय हो जाता है। इन हृदय रोगियों के लिये ई.ई.सी.पी. का आविष्कार आरोग्य का वरदान है, सुखद भविष्य का सुप्रभात है।

<u>हृदय रोगों से बचाव : ई.ई.सी.पी. का योगदान</u> :–

यह उपचार असाध्य हृदय रोगियों के लिये तो रामबाण है ही, निम्न श्रेणी के व्यक्ति, जिन्हे हृदय रोग होने की प्रबल संभावनायें हैं के लिये भी बचाव का सरल, सुगम, सस्ता और प्रभावी उपाय है।

ऐसे व्यक्ति जो हृदय रोग के किसी कारक (उच्च रक्तचाप, उच्च कॉलेस्ट्रॉल स्तर, मधुमेह, मोटापा या तनाव से पीड़ित हैं या जिनका प्रबल हृदय रोगों का आनुवांशिक इतिहास है) – उन्हे हृदय रोगों के भावी खतरों से बचाने में भी ई.ई.सी.पी. को आश्चर्यजनक सफलता मिली है। इस उपचार से हृदय धमनियों की आन्तरिक त्वचा (Endothelium) की संरचना एवं क्रिया सामान्य होने लगती है, रक्त संचार प्रणाली सुचारू हो जाती है, धमनी तंत्र स्वस्थ होता है और वे हृदय रोगों की संभावना से बच जाते हैं।

उल्लेखनीय है कि ई.ई.सी.पी. का न कोई दुष्प्रभाव है और न ही जीवन को खतरा।

<u>ई.ई.सी.पी. उपचार प्रक्रिया</u> :–

ई.ई.सी.पी. उपचार के समय रोगी को अस्पताल में भर्ती होने तक की आवश्यकता नहीं है। बिना चीरफाड़ (Surgery), बिना दर्द, बिना बेहोशी के अब हृदय रोग का सफल उपचार इस प्रक्रिया से सम्भव है।

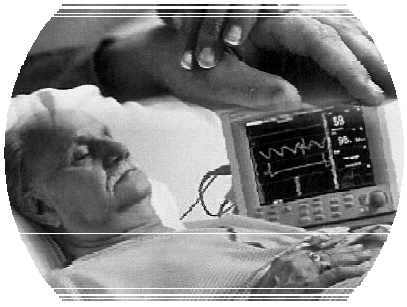

उपचार के समय रोगी आराम से सुखद निद्रा ले सकता है, पुस्तक पढ सकता है या संगीत का आनन्द ले सकता है। यह उपचार अत्यन्त कारगार होने के साथ ही महंगा भी नहीं है। 35 दिन तक नित्य एक घंटे रोगी को निपुण चिकित्सकों द्वारा उपचार दिया जाता है। उपचार से रक्त संचार में तीव्रता आती है, जिससे बन्द सह–धमनियाँ खुलने लगती हैं, हृदय– धमनियों के अवरोध हटने लगते हैं और रक्त संचार सुचारू हो जाता है।

रोगी उक्त चिकित्सा प्रारम्भ होने के कुछ ही दिनों में आराम महसूस करने लगता है और उपचार पूर्ण होते–होते अपने आप को स्वस्थ और ताजा अनुभव करने लगता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में यह उपचार दिन में दो बार भी दिया जा सकता है जिससें रोगी आधे समय में ही स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं।

ई.ई.सी.पी. की विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा/मान्यता –

यह चिकित्सा पद्धति आज विश्व में तेजी से लोकप्रियता प्राप्त कर प्रतिष्ठित होती जा रही है। अब तक लाखों रोगी इससे स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं। अमेरिका, चीन, आस्ट्रेलिया व यूरोपीय देशों ने इसके महत्व को स्वीकारा है। विश्व की प्रतिष्ठित संस्थायें– एफ.डी.ए. (यू.एस.ए), एन.एच. एस. (इंग्लैण्ड) और सी.ई. मार्क सर्टिफिकेशन (यूरोप) ने इसे मान्यता दी है। अमेरिकन जरनल ऑफ कॉर्डियोलोजी, यूरोपियन हार्ट जरनल, जरनल ऑफ इन्वेस्टीगेटिव मेडिसिन्स आदि विश्व की सम्मानित पत्रिकाओं ने इस उपचार पद्धति को स्वीकृति दी है। चिकित्सा जगत की विख्यात पुस्तकों ''हैरिसन व ब्रॉनवाल्ड'' में भी ई.ई.सी.पी. की उपयोगिता और महत्व अंकित हैं।

महान वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने तो चिकित्सा जगत के विभिन्न आयोजनों और अधिवेशनों में ई.ई.सी.पी. की भूरि–भूरि प्रशंसा कर अपनी शुभकामनायें दी हैं। मुम्बई में सन् 2005 में इन्टरवेन्शनल कॉर्डियोलोजी पर आयोजित द्वितीय विश्व कांग्रेस में तो उन्होंने यहाँ तक कहा है – 70 के दशक में बाईपास, 80 के दशक में एंजियोप्लास्टी, 90 के दशक में स्टेन्ट बडी खबर थी और अब ई.ई. सी.पी. बडी खबर है, क्योंकि यह बिना चीरफाड़ की प्रक्रिया है।

ई.ई.सी.पी. अन्य जटिल बीमारियों के उपचार में भी सफलता की ओर :–

निःसन्देह ई.ई.सी.पी. का आविष्कार चिकित्सा जगत की महान् उपलब्धि है और है आरोग्य का सफल संदेश वाहक। यह हृदय रोगों के उपचार में तो सफल और अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ ही है, पक्षाघात, मधुमेह, गठिया, श्रवण एवं दृष्टिदोष, गुर्दा एवं यकृत रोग, जोडों के रोग, स्नायुतंत्र सम्बन्धी व्याधियों के उपचार में भी सफलता प्राप्ति की ओर तेजी से बढ़ रहा है। आशा है कि शीघ्र ही हृदय रोगों के अतिरिक्त उपर्युक्त गम्भीर बीमारियों की सफल चिकित्सा भी बिना औषधियों, बिना सर्जरी के इस प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति – ई.ई.सी.पी. से सम्भव हो सकेगी।

गर्व के साथ लेख हैं कि ई.ई.सी.पी. चिकित्सा सुविधा का शुभारम्भ जयपुर में कबीर मार्ग, बनीपार्क स्थित ''बनीपार्क हार्ट एण्ड जनरल हॉस्पीटल'' में होने जा रहा हैं। शीघ्र ही देश–प्रदेश के असाध्य रोगी यहाँ चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा ई.ई.सी.पी. उपचार कराकर स्वास्थ्य लाभ कर सकेंगे।

इस चिकित्सालय में ई.ई.सी.पी. उपचार प्रारम्भ करने से पूर्व रोगी के सभी आवश्यक टेस्ट सम्पन्न होंगे। उपचार पूर्ण होने पर पुनः सभी टेस्ट किये जायेंगे, जिससे चिकित्सक व रोगी स्वास्थ्य लाभ के बारे में आश्वस्त हो सकें।

अस्पताल प्रशासन का प्रयास यही होगा कि एक बार उपचार लेने के बाद रोगी यहाँ से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करके जायें, रोग की पुनरावृत्ति सम्भावना नगण्य हो और ''हमारा निरोगी मानव जीवन का स्वप्न साकार हो''।